श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - २

जुलाई 2026

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. .... का उत्कृष्ट से सात हाथ शरीर होता है ।
२. भद्रबाहू स्वामी ने सवा लाख श्लोक प्रमाण.................... ग्रंथ की रचना की थी ।
३. शास्त्रो ने साधु को छः काय जीवों का .... कहा है ।
४. जब तक तीव्र राग, द्वेष की ग्रंथी, गांठ है तब तक प्रथम.................. है ।
५. स्थूलभद्र मुनि ने दो वस्तु कम ऐसे .... का अभ्यास किया ।
६. .... की अवगाहना मूठबंद एक हाथ जितनी होती है ।
७. .... गुणस्थान में रहा हुआ जीव आयुष्य बांधता भी नहीं और मृत्यु भी नहीं पाता ।
८. धर्म का कामकाज जीव को .... से अटकाना है ।
९. सद्‌गुरु के उपदेश से .... शास्त्रों के श्रवण से जीव, अजीवादि नवतत्व में श्रद्धा होती है वह .... है ।
१०. श्री स्थूलभद्र स्वामी.................. के उपर पाक्षिक संलेखना पूर्वक अनशन करके स्वर्ग में गये ।
११. आत्मा के विशुद्ध अध्यवसाय के बल से जीव पूर्व मे कभी न किया ऐसा ग्रंथी भेद का कार्य करता है, उसे .... कहते है ।
१२. क्रोधादिक के कारण उत्पन्न होने पर भी तीव्र क्रोध का अभाव वह.................. है ।
१३. .... सम्यक्त्वी जीव मनुष्य अथवा देवगति में जाता है ।
१४. श्रेयांस कुमार के हाथों प्रभु का.................. इक्षुरस से पारणा होता है ।
१५. सभी भय श्री पार्श्वनाथ जिनेश्वर के नाम का कीर्तन करने से .... हो जाते हैं ।
१६. गुड और दही के संयोग से तीसरा ही रस उत्पन्न होता है जिसे .... कहते हैं ।
१७. .... कषायों के उदय से जीव व्रत, पच्चखाण रहित होता है ।
१८. अंतरकरण के पश्चात शुद्ध पुंज याने सम्यक्त्व मोहनीय उदय में आये तो .... सम्यकत्व प्राप्त होता है ।
१९. श्रमणसंघ का नहीं माने उसे .... निकालना ।
२०. मिथ्यात्व जीव को .... नहीं बनने देता ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. स्थूलिभद्र मुनि ने विद्या से किसका रुप धारण किया ?
२. अभयसेन राजा के मंत्रीश्वर का नाम क्या था ?
३. अनिवृतिकरण कितने समय की क्रिया है ?
४. सम्यक्त्व किसे प्राप्त नहीं होता ?
५. वराह मिहिर मर कर क्या बने ?
६. पार्श्वनाथ भगवान किसका शमन करने वाले हैं ?
७. स्थूलिभद्रस्वामी की पाट पर कौन से मुनि आये ?
८. किस न्याय से जीव निबीड ग्रंथि के पास आता है ?
९. कडवी तुंबडी की सब्जी खा जाने वाले मुनिराज कौन से देवलोक में गये ?
१०. अंतरकरण से पहले नीचे के दलियों की उदिरणा को क्या कहते हैं ?
११. धर्मरुचि अणगार के गुरु कौन थे ?
१२. सम्यगदृष्टि का तीसरा लक्षण क्या है ?
१३. हाथी के सफेद दंतशूल किसके जैसे हैं ?
१४. सभी पाँच शरीर किसे संभवित हैं ?
१५. वेश्या ने नेपाल से क्या मंगाया ? १०

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१. कुंत २) म्रियते ३) अहिय ४) तुर्ये ५) मइंद ६) उक्कोस ७) लुण ८) लोचितं ९) वेउव्विय १०) पहरण ११) भीमं १२) पुरा
१३. भद्दा १४) दीह १५) करी १६) उच्चते १७) दगणं १८) तिक्ख १९) मणिवई २०) जहन्न

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) अभव्य	१) सम्यग् दर्शन	६) भव्य	६) यथाप्रवृतिकरण
२) मधु जैसे पीले नेत्र	२) खच्चर	७) तेइन्द्रिय	७) सिंह
३) वररुचि	३) अपूर्व करण	८) मिश्रगुणस्थान	८) त्रण गाउ
४) अग्नि जैसे नेत्र	४) तापसी दीक्षा	९) वराहमिहिर	९) वैक्रिय शरीर
५) वायुकाय	५) गजेन्द्र	१०) ग्रंथिभेद	१०) शीघ्रकवि

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. कितने दंडको में वैक्रिय शरीर नहीं होता ?
२. वीर प्रभु और भद्रबाहुस्वामी का अंतर कितने साल का है ?
३. कितने गुणस्थानक परभव में साथ जाते नहीं ?
४. क्षायोपशमिक सम्यक्त्व की स्थिति कितने सागरोपम की है ?
५. "नमिउण" की कितनावी गाथा में नौ भय के शमन की बात बंताई है ?
६. मिश्र गुणस्थानक में कितनी प्रकृति बंध में होती है ?
७. तीन शरीर कितने दंडक में होते हैं ?
८. स्थूलभद्रस्वामी का युगप्रधान पर्याय कितने साल का था ?
९. तिर्यंच की वैक्रिय अवगाहना कितने योजन की है ?
१०. जितशत्रु राज को वराहमीहीर ने कितने पल का मत्स्य आकाश से गिरेगा वह बताया ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. भद्रबाहूस्वामी को दिगंबर संप्रदाय मान्यता नहीं देता ।
२. जयणा पालन मे परमात्मा के शासन में बताई आहार विधि सहायक बनती है ।
३. अनिवृतिकरण की पूर्णाहूति होते ही क्षायिक सम्यकत्व की प्राप्ति होती है ।
४. अभव्य जीव क्षायिक सम्यकत्व नहीं पा सकते पर उपशम सम्यकत्व पा सकते है ।
५. भद्रबाहू स्वामी पाँचसौ साधुओं को प्रतिदिन सात वाचना देते थे ।
६. देवता जमीन से चार अंगुल अध्धर होते हैं ।
७. सब्जी सुधारती बहन के हाथ से आहार पानी लेना साधु को कल्पता नहीं ।
८. कार्मण शरीर सर्व आत्म प्रदेश में व्याप्त होने से उसकी अवगाहना मूल शरीर से थोडी अधिक होती है ।
९. श्री पार्श्वजिनेश्वर के नाम का कीर्तन करने से इत्यादिभय जाते है ।
१०. विकलेन्द्रिय को चार शरीर होते हैं ?

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. परमात्मा के शासन की सूक्ष्मता, गहनता, एवं दीर्घ दृष्टि उन्हें स्पर्श कर गयी ।
२. रोगजल जलण विसहर चोरारि मइंद गय रणभयाई ।
३. सव्वेसिंपि जहन्ना, साहाविय अंगुलस्स असंखसो ।
४. तदर्धपुद्गलावर्त भवैर्भव्यैरवाप्य ते ।
५. तुम सूत्रपाठ के लिये अयोग्य हो ।
६. भयंकर बडे गजेन्द्र भी अति नजदीक आया हो तो भी उसे गिनते नहीं ।
७. क्या माता अपने बालक के लिये त्याग नहीं करती ।
८. चौबीस दंडक में शरीर की जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग जितनी होती है ।
९. यह शकडाल मंत्री नंदराजा को मारकर अपने पुत्र श्रीयक को राजगद्दी पर बैठायेगा ।
१०. कर्म सिद्धांत मिथ्यात्व में से सम्यग् दर्शन प्राप्त करने का व्यवस्थित मार्ग बताता है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. अंतरकरण समझाओ । २) भद्रबाहूस्वामी की स्थूलभद्रजी को शिक्षा और परिणाम ।
३. शरीर द्वार समझाओ । ४) छः काय जीवों की साधुओं ने किस तरह कालजी करना चाहिये ।
५. क्रोधित सिंह कैसा है ? उसे कौन गिनता नहीं है ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com